**8.** किन्हीं **पाँच** वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

(i) गाँव के दोनों ओर वृक्ष हैं।

(ii) बालक पैदल विद्यालय जाता है।

(iii) वह कान से बहरा है।

(iv) हम कल शिमला जाएंगे।

(v) गीता ने कल पाठ पढ़ा।

(vi) ईश्वर को नमस्कार है।

(vii) मुझे पढ़ना अच्छा लगता है।

(viii) वृक्ष से फल गिरते हैं। 5×2=10

इस संसार में धर्म और अधर्म सतोगुण और तमोगुण का संधर्ष अनादिकाल से चला आया है।

एक व्यक्ति परमार्थ, परोपकार, करुणा का मार्ग ग्रहण करके आत्मा को ऊँचा उठाने का प्रयन्त करता है और दूसरा अन्याय, अत्याचार, क्रूरता के द्वारा भी अपने स्वार्थ साधन, वैभवविलास, में भी रत रहता है। इस प्रकार के दो मनुष्यों का टकरा जाना स्वाभाविक है। यद्यपि परमार्थ मार्ग का पथिक किसी का अनहित नहीं चाहता, वह अत्याचारी की भी कल्याण कामना ही करता है। पर जो क्रूर बुद्धिहोता है वह तो कभी सन्तुष्ट ही नहीं होता, वह अपने हित कर्ता के साथ भी बुराई करने को तैयार रहता है।

7. संस्कृतेऽनुवादोविधेय :- (10 mins)



सारा संसार इसी प्रकार दुःखमय है। इसलिए इस संसार समुद्र में दुःखों से बचाने वाले एक मात्र भगवान् ही हैं। मनुष्य सोचता है कि अभी तो मैं बालक हूँ, इच्छानुसार खेलकूद लूँ। युवा अवस्था आने पर कल्याण साधन का प्रयत्न करूँगा। फिर युवा होने पर कहता है कि-अभी तो मैं संसार सुख भोग लूँ। बुढ़ापे में धर्म ध्यान करूँगा। जब वृद्ध हो जाता है तो अनुभव करता है अब तो मैं शक्तिहीन हो गया, मेरी इन्द्रियाँ कर्मों में प्रवृत्त ही नहीं होतीं। शरीर के शिथिल हो जाने पर मैं क्या कर सकता हूँ ? समय रहते तो मैंने कुछ किया ही नहीं। इस प्रकार वह कभी कल्याण पथ पर अग्रसर नहीं हो पाता और केवल भोग तृष्णा में ही व्याकुल रहता है।

7. सस्कृतऽनुवादः ावधयः – 20

सज्जनों के आचार को शिष्टाचार कहते हैं। सज्जन पुरुष सदा दूसरों का उपकार करते हैं। अपनों से बड़ों का आदर और सम्मान करते हैं। दूसरों के दुःख में दुःखी होते हैं। स्वार्थ की सिद्धि के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाते। मधुर वचन बोलते हैं। प्रत्येक मनुष्य को शिष्टाचार का पालन करना चाहिए। उसका कर्त्तव्य है कि वह बड़ों की आज्ञा का पालन करे, उनका आदर करे। अपने संबंधियों से प्रेम करे। सबसे स्नेह का व्यवहार करे।

2. निम्नलिखित गद्यांश का संस्कृत में अनुवाद कीजिए : 15

ईश्वर सृष्टि का कर्ता, धर्ता एवं संहर्ता है। वही जगत् का नियन्ता है। मनुष्य जीवन को शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए ईश्वर-भक्ति अत्यावश्यक और अनिवार्य है। ईश्वर-भक्ति का अर्थ है--ईश्वर के प्रति अनुराग। संसार में सबसे बड़ी वही शक्ति है। उसके चिन्तन से मनुष्य अपने अन्दर सभी उत्तम गुणों का समावेश करता है। ईश्वर

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 10

लोके सदा दृश्यत एतद् ये जना अतीव साधवः सरला भवन्ति, तेषामादरो न भवति। दुष्टास्तेषां धनादिकमपि हरन्ति, कार्य-बाधां च कुर्वन्ति। अत एवोच्यते-मृदुर्हि परिभूयते। राजनीतौ च विशेषतः शठेषु शठतायाः प्रयोगः करणीयः। अन्यथा कार्य-सिद्धिर्न भविष्यति। उक्तं च नैषधचरिते-आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।

अथवा

मनुष्यो जीवननिर्वाहाय यां कामपि आजीविकां गृहीतुम शक्नोति, पठनं पाठनं कृषिं वाणिज्यं सेवाकर्म समाजसेवादिकं वा। परन्तु स सदा जीवनसाफल्याया सत्कर्म अवश्यं कुर्यात्। निरुद्देश्यं जीवनं विनश्यति। अतः कदाचिदपि उद्देश्यत्यागो न विधेयः। मनुष्यस्य सदुद्योगेन सदुद्देश्यमपि अवश्यं पूर्णं भवति।

7. संस्कृते अनुवादो विधेयः। (20)

वारा के प्रकृति चित्रण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि, वे प्राकृतिक दृश्यों को वातावरण अथवा देश-काल के अनुरूप चित्रित करते है। जिसे वर्णन करने में अधिक स्वाभाविकता का समावेश हो जाता है। इसका उदाहरण कादम्बरी के कथामुख में आया हुआ महर्षि जावालि के आश्रम में संन्ध्या वर्णन का चित्र देखा जा सकता है। दिन समाप्त हो जाने पर, लाल नक्षत्रों वाली गुलाबी संन्ध्या तपस्वियों को ऐसी प्रतीत होती है - जैसे तपोवन की लालप्रत्तलियोंवाली कपिला गौ बन से लौट आई हो। कमलिनी के पति सूर्यदेव परदेश चले गए हैं। फिर भला कमलिनी कैसे सुखी रहे ?

❁❁❁❁

7. संस्कृतेऽनुवादोविधेयः -

20

सूर्योपासना का प्रत्यक्ष फल तत्काल प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं। श्रीकृष्ण पुत्र साम्ब तथा मयूर कवि–इनकी ही कृपा से कुष्ठ रोग से मुक्त हुए, यह बात सर्व विदित है। इसी प्रकार युधिष्ठिर भी जब द्यूत में सब कुछ गंवाकर वन की ओर चले तो उनके पीछे उनके परिवार के अतिरिक्त ब्राह्मण एवं प्रजा वर्ग की एक विशाल पंक्ति भी चलने लगी। उस समय वे किसी भी प्रकार उनके पालन-पोषण में समर्थ नहीं हो पा रहे थे और प्रजाप्रिय होने के कारण वे उनका परित्याग भी नहीं करना चाहते थे। उन्होंने अपनी स्थिति अपने पुरोहित महर्षि धौम्य जी से निवेदित की। उन्होंने कहा कि सृष्टि के आरंभ से ही भगवान् सूर्य सम्पूर्ण प्रजा का पिता की भाँति औषधि एवं अन्नों की उत्पत्ति के द्वारा पालन-पोषण करते आ रहे हैं। अतः यह अन्न सूर्य रूप ही है। आप उनके एक सौ आठ नामों से उनकी उपासना करें, वह तत्काल प्रकट होकर आपका अभीष्ट सिद्ध करेंगे।

7. संस्कृतेऽनुवादोभिधेयः - 20

भारतवासी ऋषिमुनियों ने तत्वज्ञान प्राप्ति के लिये महान् प्रयत्न किया था। उन्होंने प्राचीन शास्त्रों तथा अपने अनुभव के बल पर यही निर्णय किया कि सत्व, रज तथा तमोयुक्तात्रिगुणात्मिका प्रकृति से संचालित एवं नियन्त्रित सभी जीव निकायों में विशेष शक्तियुक्त और बुद्धिमान मनुष्यों के लिए चारों पुरुषार्थों में एकमात्र मोक्ष ही परम शान्तिप्रद और अन्तःकरण से अभीष्ट पदार्थ सिद्ध होता है। अतः मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना ही मानवोचित-बुद्धिमत्ता है।

सभी देवों एवं दानवों ने मिलकर समुद्र मन्थन किया। समुद्र मन्थन करने पर समुद्र से चौदह रत्न निकले। उन रत्नों में एक विष भी था, जिसकी हवा लगने से ही सभी पीड़ित हो उठे। अतः सभी देवों एवं दानवों ने दीन–बन्धु भगवान शंकर की स्तुति की उस स्तुति से प्रसन्न होकर आशुतोष शंकर ने उन देव–दानवों से कहा कि आप सबके ऊपर कौन सी ऐसी–विपत्ति आ पड़ी है, जिससे पीड़ित होकर आप यहाँ आये हैं। प्रत्युत्तर में उन देव–दानवों ने शंकर से कहा कि इस गरल के प्रभाव से हम सब हताश से हो गये हैं। अतः आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं। अतः हमारी रक्षा के लिये आप कृपया इस प्राणघातक विष को उठाकर पी जायें। सर्वकल्याणकर्ता भगवान शंकर ने उनकी व्यथा सुनकर सहर्ष विषपात्र को उठाकर विषपान कर लिया, जिससे उनके गले में नीलवर्णका निशान पड़ गया। अतः भगवान शंकर नीलकण्ठ इस नाम से प्रसिद्ध हो गये।

7. संस्कृत-भाषायामनुवादो विधेयः 20

श्री राम मर्यादा पुरूषोत्तम थे। सर्व सामर्थ्यवान् होते हुए भी उन्होंने मर्यादा का अतिक्रमण कभी नही किया। लङ्कागमन के समय अपने मार्ग में समुद्र को बाधक जानकर लक्ष्मण ने समुद्र को मरूस्थल के रूप में परिवर्तित करना चाहा। तब सीता पति श्री राम ने लक्ष्मण के अभिप्राय को जानकर कहा कि हे सौमित्रेय बल प्रदर्शन तो अन्त में करना चाहिये। अतः सर्वप्रथम हमें समुद्र की प्रार्थना करनी चाहिये। हमारी प्रार्थना से प्रसन्न होकर समुद्र लङ्कागमन का कोई उपाय अवश्य बतलायेगा। ऐसा करने पर सर्वप्रथम तो मर्यादा की रक्षा होगी तथा मर्यादा रक्षा के साथ ही हमारा कार्य भी सिद्ध हो जायेगा। इसीलिये श्री राम को आज भी लोग मर्यादा पुरूषोत्तम नाम से जानते हैं।

78 250 56 175 150 60

7. संस्कृतेनानूद्यताम् - 20

आज पर्यावरण प्रदूषण एक महती समस्या है। दिन प्रतिदिन वन काटते जा रहे हैं। पेयजल दूषित हो रहा है। इससे अनेक बीमारियाँ फैल रही हैं। राजमार्ग पर विभिन्न छोटी-बड़ी गाड़ियों से निकलने वाला धुआँ अन्धा बना देता है। कारखानों की चिमनियाँ भक् भक् करती वायुमण्डल को दूषित कर रही हैं। इसी के साथ मानसिक प्रदूषण भी घातक है। क्या कारण है, जो संयुक्त परिवार टूट रहे हैं? अंधे की लकड़ी माने जाने योग्य सन्तान बुजुर्गों से सम्बन्ध तोड़ रही है। भाई-भाई का शत्रु बनकर महाभारत रच रहा है।

7. गद्यमिदं संस्कृतभाषयाऽनूद्यताम्—

संस्कृत भाषा ही संस्कृति का मूल आधार है। इस भाषा के सम्भाषण में हमें गर्व होना चाहिए परन्तु कुछ लोग आंग्ल भाषा को अपना कर अपना सम्मान समझते हैं जब कि यह एक सच्चे भारतीय के लिए बड़े अपमान की बात है। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए संस्कृत में ही वार्तालाप कीजिए और इसके प्रचार-प्रसार में योगदान कीजिए।

7. निम्नलिखितस्य गद्यभागस्य संस्कृतेन अनुवादः कार्यः– 20

राजा दशरथ धनुर्विद्या में बहुत प्रवीण थे। उन्हें चल तथा स्थिर लक्ष्य को बींधने का बड़ा अभ्यास था। वे शब्द सुनकर भी वन्य प्राणियों को सरलता से अपना लक्ष्य बना लेते थे। एकबार श्रवणकुमार अपने अन्धे माता-पिता के लिए जल लाने गये। जब श्रवणकुमार घड़े को भर रहे थे, हाथी के भ्रम से राजा दशरथ ने तीर चला दिया। श्रवणकुमार का उसी क्षण देहान्त हो गया। श्रवणकुमार के माता-पिता भी पुत्रशोक से दिवंगत हो गये। उन्हीं के शाप से राजा दशरथ की मृत्यु भी पुत्रवियोग से हुई।

6. संस्कृत भाषायाः अनुवादो विधेयः :-

पंचपुर नगर में एक ब्राह्मण रहता था। उसका पुत्र देवशर्मा था। वह पढ़कर किसी और देश को चला गया और वहाँ भागीरथी के किनारे तप करने लगा। एक दिन वह तपस्वी गंगा के किनारे जप के लिए बैठा था। उस समय किसी उड़ती हुई बलाका ने उसके शरीर पर बीठ कर दी। इससे वह क्रुद्ध हो गया और उसने ऊपर देखा। उसके क्रोध की आग से जलकर बलाका भूमि पर आ गिरी ; यह देखकर उसे अपने तप पर गर्व हो गया।

अथवा

(क) आप और हम रविवार को अमृतसर जाएंगे।

(ख) वह आँख से काना और पाँव से लँगड़ा है।

(ग) उसने गर्म पानी से हाथ पाँव धोये।

(घ) चोर कपड़े चुराकर भाग गया।

(ङ) बच्चा आज नहीं रोएगा।

(च) उगते हुए सूर्य को सभी प्रणाम करते हैं।

(छ) गाँव में चारों ओर फूल खिले हैं।

(ज) आज का छात्र सुखार्थी है, विद्यार्थी नहीं।

(झ) विद्वानों का सर्वत्र आदर होता है।

(ञ) विज्ञान के वरदानों की अपेक्षा अभिशाप अधिक हैं।

(ट) पिता पुत्र को याद करके रोता है।

12 (ठ) पशु भी मनुष्य के उपकार को समझते हैं।

6. संस्कृतभाषया अनुवादो विधेयः

(क) काश्मीर जाकर हम बहुत सुन्दर दृश्य देखते हैं।

(ख) हे बालक ! तू सिंह को देखकर क्यों डरता है !

(ग) मोहन दौड़ता हुआ गिर पड़ा।

(घ) राम भागता हुआ गया।

(ङ) प्रातःकाल छात्र को उठ जाना चाहिए। छात्रेण

शाम के समय कोई न कोई खेल अवश्य खेलो।

(छ) पशु भी मनुष्य के उपकार को समझते हैं।

(ज) कुम्हार मिट्टी के बरतन बनाता है।

अथवा

राजा दशरथ धनुर्विद्या में बहुत प्रवीण थे। उन्हें चल तथा स्थिर लक्ष्य को बींधने का बड़ा अभ्यास था। वे शब्द सुनकर भी प्राणियों को सरलता से लक्ष्य बना लेते थे। एक बार श्रवण कुमार अपने अन्धे माता-पिता के लिए जल लाने गये। जब श्रवण कुमार घड़े को भर रहे थे ; हाथी के भ्रम से राजा दशरथ ने तीर चला दिया। श्रवण कुमार का उसी समय देहान्त हो गया। श्रवण कुमार के माता-पिता भी पुत्र शोक से दिवंगत हो गये। उन्हीं के शाप से राजा दशरथ की मृत्यु भी पुत्र वियोग से हुई।

6. संस्कृत भाषया अनुवादो विधेयः- (20)

क) किसके साथ मैं अपने दुःख को बाँट सकता हूँ।

ख) एक पागल लड़का दौड़ता हुआ आया।

ग) उसकी ऐसी दशा देखकर मेरा जी भर आया।

घ) ईश्वर जब देता है तब छप्पर फाड़कर देता है।

ङ) मेरी सब आशाओं पर पानी फिर गया।

च) मेरे पाँव में काँटा चुभ गया है, उसे सूई से निकाल दो।

छ) बुरों का साथ छोड़ और भलों की संगति कर।

ज) सूर्य निकल रहा है और अन्धेरा दूर हो रहा है।

अथवा

ईश्वर की सृष्टि विचित्रताओं से भरी हुई है। इसका जितना अन्वेषण किया जाएगा, उतनी ही विचित्रता की नई–नई श्रृंखलाएँ मिलती जाएँगी। कहाँ एक छोटा सा बीज और कहाँ उससे उत्पन्न एक विशाल वृक्ष, दोनों में महान् अन्तर है, तथापि दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध वर्तमान है। एक छोटे से बीज के गर्भ में क्या–क्या भरा हुआ है। वह छोटा बीज ही बढ़ते–बढ़ते एक विशाल वृक्ष के रूप में परिणत हो जाता है, और वह वृक्ष पत्र, पुष्प तथा फल से सम्पन्न हो कर इस पृथ्वी तल को मण्डित करता है।

9. (क) अधोलिखितस्यानुच्छेदस्य संस्कृतेऽनुवादं कुरुत - 10

हमारे देश का नाम भारत है। इसकी गणना विश्व के प्राचीनतम देशों में होती है। मानवीय सभ्यता का उदय भारत में ही हुआ। भारत की समृद्ध ज्ञान-परम्परा है। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद इस ज्ञानपरम्परा का प्रतिनिधित्त्व करते हैं।

(ख) केषाञ्चिद् दशवाक्यानां संस्कृतेऽनुवादो विधेयः - 10

(i) हिमाचल की राजधानी शिमला है।

(ii) हिमालय भारत की रक्षा करता है।

(iii) रामायण के नायक मर्यादापुरुषोत्तम राम थे।

(iv) महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ।

(v) संस्कृत पढ़ो और आगे बढ़ो।

(vi) पर्यावरण की रक्षा हमारा दायित्त्व है।

(vii) तीव्रगति से वाहन न चलायें।

(viii) सड़क के नियमों का पालन करो।

(ix) उनसठ छात्रों ने परीक्षा में भाग लिया।

(x) मेले हमारी संस्कृति के परिचायक हैं।

(xi) अगले साल हम कहाँ होंगे ?

(xii) देश की स्वतंत्रता के लिए अनेक वीरों ने बलिदान किया।

(xiii) विद्यालय में अवकाश कब है ?

6. अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृते अनुवादो विधेयः 25

क) बुरों का संग त्याग और सज्जनो की संगति कर

ख) राम। बाजार जाओ, झटपट पचपन आम खरीद कर लौट आओ।

ग) एक दिन महर्षि ने ध्यान के समय दूर जङ्गल में धधकती हुई आग को देखा।

घ) बुद्धिमान निज स्वार्थपूर्ति हेतु अपने शत्रुओं को भी अपने कन्धे पर उठा कर ले जाए।

ङ) संसार में सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका अपने आप को विश्वभर की पुलिस समझता है।

च) आतङ्कवाद से मालूम होता है कि समस्त धरा पर पुनः राक्षसों का अतिक्रमण बढ़ रहा है।

छ) कश्मीर भारत का अभिन्न अङ्ग है, इस अलाप से कश्मीर समस्या का समाधान नहीं हो जाता।

ज) कुटिल के साथ कुटिलता का आचरण करना धर्म कहलाता है।

झ) प्राचीन भारत कितना विशाल था इसका अनुभव पुरातन साहित्य के अध्ययन से ही हो सकता है।

ञ) यह विस्तीर्ण शास्त्र है और यह संक्षिप्त।

अथवा

इस प्रकार शनैः शनैः शिक्षा प्राप्त कर अज जवान हो गया। पिता की आज्ञा से उसने इन्दुमती के स्वयंवर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में उसने हाथी का रूप धारण किये हुए उस प्रियंवद गन्धर्व को मारकर योनिमुक्त किया। जिसको महर्षि मातङ्ग का शाप था। उसने प्रसन्न होकर अज को सम्मोहन नामक अस्त्र दिया। इस प्रकार अज विदर्भ नरेश भोज की नगरी में जा पहूंचा। भोज ने उसका स्वागत किया और अपने सुन्दर महल में ठहराया। अज ने समस्त स्नानादि क्रियाएँ समाप्त कर विश्राम किया।

6. अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृते अनुवादो विधेय : (25)

क) गुरू एवं माता पिता को सेवा से प्रसन्न किया जा सकता हैं।

ख) अचानक कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए।

ग) वेद भारतीय संस्कृति के अमूल्य रत्न हैं।

घ) राम ने बाण से रावण को मारा।

ङ) बालक कलम से लिखता है।

च) चार लड़कियाँ खेल रही हैं।

छ) तीन छात्र स्नान करके भाग गए।

ज) वह हँसता हुआ उद्यान जा रहा है।

भारतीय जीवन में नैतिकता तथा आध्यात्मिकता सम्बन्धी मूल्य मानव व्यक्तित्व के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। भारत के सभी धर्मों की शिक्षा में व्यक्ति का महत्त्व मान्य किया गया है। व्यक्तिगत व्यक्तित्व नैतिक निर्णय तथा नैतिक उत्तरदायित्व ग्रहण करने की क्षमता ग्रहण कर सकता है। मानव व्यक्तित्व के समुचित विकास हेतु हर प्रकार का दबाव दूर करना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में उत्पन्न समस्याओं को हल करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। व्यक्तित्व विकास हेतु यह भी आवश्यक है कि नैतिकता तथा आध्यात्मिकता पर आधारित सामाजिक सम्बन्धों का समुचित विकास किया जाए।

6. अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृतेऽनुवादो विधेयः- 25

(i) वे दोनों छात्र संस्कृत ध्यान से नहीं पढ़ते।

(ii) पुत्र अपने बूढ़े माता-पिता की रक्षा करता है।

(iii) क्या तुम दोनों रोज सिनेमा देखते हो ?

(iv) विद्यालय के चारों ओर हरे वृक्ष हैं।

(v) वे चोरों से डरते हैं।

(vi) वह ब्राह्मण को गाय देता है।

(vii) हम दोनों साधना के द्वारा मन को जीतते हैं।

(viii) मैं प्रतिदिन व्यायाम करके दूध पीता हूँ।

(ix) वह विद्यार्थी गुरूओं पर क्रोध करता है।

(x) संस्कृत वाक्यों में कर्त्ता के अनुसार ही पुरुष व्यवस्था होती है।

अथवा

नैतिकता मानव जीवन का गहना है। आध्यात्मिकता मानव जीवन का प्राणवायु है। भारत के सभी धर्मो की शिक्षा में व्यक्ति के महत्त्व को मान्यता मिली है। मानव व्यक्तित्व के विकास के लिए प्रत्येक प्रकार का दबाव दूर करना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतन्त्रता होनी चाहिए। किन्तु धर्म की सही परिभाषा भी मनुष्य को समझनी होगी। प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र के लिए कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए। भारत के प्रत्येक गाँव को वैज्ञानिक उन्नति का लाभ मिलना चाहिए, तभी कृषि प्रधान भारत की अर्थव्यवस्था परिपुष्ट होगी। सच्ची नैतिकता कर्त्तव्य बोध में है।

6. अधोलिखितेषु वाक्येषु दशवाक्यानां संस्कृतेऽनुवादो विधेयः - 25

(i) प्रत्येक क्षेत्र में परिश्रम से ही सफलता मिलती है।

(ii) क्या राम और श्याम घर जाकर स्नान करते हैं ?

(iii) विद्यालय के दोनों तरफ सुन्दर उपवन हैं।

(iv) वृक्ष से पुष्प वर्षा हुई।

(v) हम दोनों शिमला जाते हुए प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द ले रहे थे।

(vi) वह पांव से लंगड़ा है।

(vii) राम ने धोबी को कपड़े धोने के लिए दिये।

(viii) चार लड़कियाँ खेल रही थीं।

(ix) सहसा कोई कार्य मत करो।

(x) वेद ज्ञान के खजाने हैं।

(xi) राजा ने ब्राह्मणों को धन दिया।

अथवा

निम्न गद्य भागस्य संस्कृतेऽनुवादो विधेयः -

*श्रीकृष्ण और सुदामा शैशवकाल से मित्र* थे। ये दोनों बचपन में गुरु संदीपन के घर में रहते थे। दोनों साथ ही गुरु की सेवा करते थे। और साथ ही विद्या पढ़ते थे। एक बार गुरुमाता के कहने पर वे दोनों लकड़ियाँ लाने के लिए वन को गए। वन में लकड़ियाँ काटते हुए उन दोनों को शाम हो गई। आकाश बादलों से ढक गया, वर्षा जोर से होने लगी । दोनों सहपाठी जंगल में जानवरों के डर से एक पेड़ पर चढ़ गए। सहसा श्रीकृष्ण के कानों में सुदामा के कुछ खाने की ध्वनि पड़ी। वे बोले-भाई थोड़ा सा खाद्य-पदार्थ हमें भी दो अकेले ही क्यों खाते हो।

८. केवलं दश वाक्यानामनुवादं संस्कृतेन कार्यः 25

(क) गंगा हिमालय से निकलती है ।

(ख) राम ने रावण को वाण से मार गिराया ।

(ग) सभी लोग स्वार्थ साधन करना चाहते हैं ।

(घ) आहार और व्यवहार में संकोच न करने वाला सुखी रहता है ।

(ङ) यदि राजा ही अन्याय करता है तो उसे कौन रोक सकता है ।

(च) लेने-देने से सभी अपने हो जाते हैं ।

(छ) जो मुसीबत में नहीं घबराता वही संसार में सुख भोगता है ।

(ज) भाग्य के विपरीत होने पर तिनका भी प्राय: वज्र बन जाता है ।

(झ) तुम मेरे जीवन के एक मात्र धन हो ।

(ञ) विद्या उसकी जिह्वा पर थी ।

**अथवा**

बालक का मन कच्ची मिट्टी के समान होता है। कुम्हार अपने चाक के सहारे कच्ची मिट्टी का मनोवाञ्छित रूप देता है । इसी प्रकार शिक्षक शिक्षा के द्वारा बालक के भविष्य का निर्माण करता है। बालक के मन में यह भावना भर देनी चाहिए कि मैं महान हूँ और अवसर प्राप्त होने पर अपनी शक्तियों का पूरा पूरा विकास कर सकता हूँ । 25

. केषाञ्चित् दशवाक्यानां संस्कृतभाषायामनुवादः करणीया – 15

(क) राजा हरिश्चन्द्र ने अनेक कष्ट सहते हुए अपने जीवन में सत्य का पालन किया।

(ख) हमारी प्रायः सभी प्रमुख नदियाँ हिमालय से निकलती हैं।

(ग) कल आम के वृक्ष से अनेक पके हुए फल गिरे।

(घ) आदिकवि वाल्मीकि द्वारा विरचित रामायण में चौबीस हजार श्लोक हैं।

(ङ) महापुरुष सदैव सभी का कल्याण चाहते हैं।

(च) निरीक्षक ने छात्रों को पुरस्कार दिये।

(छ) सिंह की गर्जना सुनकर वन के पशु डर गये।

(ज) उन्होंने अपने जीवन में कठोर परिश्रम से सफलतायें प्राप्त कीं।

(झ) इस गांव के दोनों ओर घने जंगल हैं।

(ञ) महर्षि व्यास द्वारा विरचित महाभारत शान्तरस–प्रधान एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है।

(ट) सज्जन सदैव अपने कर्तव्य का पालन करते हैं।

(ठ) हमारा विद्यालय नगर के समीप है।

---

(…) यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिस्स धर्मः।

4. Translate this passage into English or Hindi :— 20

भारतीय संस्कृतेः आध्यात्मिकं पक्षमेव सर्वातिशायिनं मन्वानाः जनाः स्वदेशीया अपि तस्याः भौतिकं प्रविरल विषयमविषयं वा स्वीकुर्वाण। अद्यत्वेऽखिलेष्वपि भौतिकेषु क्षेत्रेषु पाश्चात्यानामनुकरणं कुर्वन्तस्स्वीयं भौतिकं विलासं विस्मृतवन्त इव दृष्टिपथे पथिकायन्ते। एतेन मन्ये भारतीयसंस्कृतेर्नेदं यशोगानम्। विकत्थनमेव। यस्यां संस्कृतौ वेदाः प्रादुरभूवन् तस्यामुपवेदा अपि निबद्धा वभूवुः। वेदानां किं रहस्यं किञ्च तेषां श्रेयः? अत्र विषये विदुषां सम्मतं मतमेव, नास्य कोऽपि विशेषस्कारोऽत्रापेक्ष्यते। परमपुवेदा अस्माकं विज्ञानानि पारिभाषिकाणि शास्त्राणि कलाप्रबन्धाश्चेत्यस्माकमस्ति कापि विज्ञप्तिः। चतुः प्रकारं स्थापत्यम्, अष्टधा च चिकित्सितं, सप्राङ्गो धनुर्वेदः, स्वरग पदग-लयग-अवधानगात्मकं संगीतम्, घन-वितत-तत-सुषिरात्मकं वाद्यम्। लास्य-ताण्डवादिनृत्तनृत्यात्मकं नाट्यं, चतुःषष्टिः कलाश्चेति सर्वं विद्याविज्ञानकलापारम्पर्यं कुतः प्रादुर्भूतमित्यत्र जिज्ञासायाम् उपवेदाः एवास्माकं शरणमिति।